एक ओंकार (ੴ) सतिगुरु प्रसादि ॥

इतिहास गुरू खालसा (पंथ) अठाहरवीं शताब्दी से बीसवीं शताब्दी के मध्य तक

व

स्वन्त्रता का सिक्ख संग्राम

अथवा

सिक्ख इतिहास भाग द्वितीय

www.sikhworld.info
E-mail: info@sikhworld.info
&
jasbirsikhworldinfo@gmail.com

क्रांतिकारी जगद्गुरु नानक चेरीटेबल

द्वितीय – अंश 11

लेखकः
जसबीर सिंघ
फोनः 0172 – 21696891
मो. 99881 – 60484

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

आन्दोलन गुरुद्वारा गुरू का बाग

सिक्ख इतिहास, भाग–दूसरा

लेखक : स. जसबीर सिंघ

क्रांतिकारी गुरू नानक देव चैरिटेबल ट्रस्ट, चण्डीगढ़

Website : www.sikhworld.info

विषय – सूची

क्रमसंख्या	शीर्षक	पृष्ठसंख्या
1.	गुरद्वारा गुरू का बाग	
2.	मोर्चा गुरू का बाग के संबंध में	
3.	गुरू के बाग पहुंचने के उपरांत	

गुरद्वारा गुरू का बाग

यह घटना गुरद्वारा गुरू का बाग की है। अमृतसर से अजनाला को जाने वाली सड़क पर अमृतसर से 13 – 14 मील दूर और सड़क से थोड़ा सा हटकर, गांव घुकेवाली रोड़, जिला अमृतसर की जंगली चरागाह में यह स्थान स्थित है। यहां पर श्री गुरू अर्जुन देव जी ने और फिर श्री गुरू तेग बहादुर साहिब ने चरण डाले थे। इनकी याद में दो गुरद्वारे यहां पर बने हुए हैं। गुरद्वारों के समीप, गुरद्वारे के मालिकाना हक में कुछ जमीन है जो किसी समय बाग थी। पर आज से लगभग पौन – शताब्दी पूर्व जब यह घटना हुई, यह जमीन गैर – आबाद व बंजर थी। इस में कहीं – कहीं कीकर लगे थे। इस गुरद्वारे का मंहत सुंदर दास अपने व्यभिचार के कारण इलाके में बहुत बदनाम था। उसने कई व्यभिचारी औरतें रखी हुई थीं। इसलिए गुरद्वारा तरन तारन का 26 जनवरी, 1921 को कब्जा हो जाने के पश्चात, उस इलाके की संगत के बल देने पर दिनांक 31 – 1 – 21 को पचास सिखों का जत्था सरदार करतार सिंघ झब्बर की जत्थेदारी में गुरू के बाग घुकेवाली रोड़ पहुंच गया। इलाके के कुछ सिख यहां पर पहले ही पहुंचे हुए थे। जब झब्बर जी का जत्था राजा सांसी क्षेत्र से, गुरू के बाग को पैदल रवाना हुआ तो आस – पास के गांवों के और कई सिखों के जत्थे साथ शामिल होते हुए। शाम के चार बजे गुरू के बाग पहुंचने तक इन की संख्या चार – पांच सौ हो गई। इन्होंने जाते ही सरोवर के किनारे दीवान सजा दिया। झब्बर जी के आधे घंटे के भाषण के पश्चात दीवान समाप्त करके, जत्था गुरद्वारे में दाखिल हो गया। इन्होंने महंत के आदमियों को गुरद्वारे के अहाते से बाहर निकाल दिया। जगह – जगह पर जत्थे के सिख अलग – अलग डयूटियों पर लगा दिये। महंत व उस के आदमी, महंत के रिहायशी मकान पर चले गए। इसी समय सरदार दान सिंघ विछोआ भी लगभग चालीस सिखों के जत्थे के साथ यहां पर पहुंच गए। ये इस इलाके के रहने वाले जाने – माने व बुद्धिमान व्यक्ति थे। महंत सुंदर दास पर ये अपना प्रभाव रखते थे। इनकी प्रेरणा पर मंहत मान गया कि वह गुरद्वारा, पंथक कमेटी को सौंप कर, कमेटी के अधीन रहकर गुरद्वारे की सेवा करेगा। अमृतपान करके वह सिख बन जाएगा। अपनी रखेलों में से एक स्त्री 'नामी' महिला से अनंद कारज करवा कर, बाकी औरतों को स्वतंत्र कर देगा। उस समय इलाके के कुछ सिखों की स्थानीय कमेटी चुन ली गई। कमेटी को कब्जा दिये जाने की लिखा – पढ़ी भी महंत ने कर दी। 8 जनवरी 1921 को अमृतपान करके, इशरी, जिस का नाम अमृतपान करने के पश्चात ज्ञान कौर रखा गया था। के संग उसका अनंद पढ़ा दिया गया। इस प्रकार गुरू के बाग का प्रबंध कमेटी को सौंपा गया। उस समय से डेढ साल तक यह प्रबंध, कमेटी के अधीन शांति से चलता रहा बल्कि प्रलिस द्वारा भी कमेटी की सहायता की जाती रही। पुलिस कप्तान मिस्टर मैक्फरसन स्वयं इस दौरान में कमेटी के साथ रहा। परंतु इस डेढ साल के समय में कुछ ऐसी घटनाएं हुई, जिनका संक्षिप्त उल्लेख गुरू के बाग के मोर्चे को समझने के लिए जरूरी है।

20 फरवरी, 1921 को गुरद्वारा श्री जन्म स्थान ननकाणा साहिब में लगभग 150 सिखों को शहीद करने और कईयों को जिंदा जला देने की हृदय वेधक घटना में मिस्टर किंग, कमिशनर लाहौर सरीखे अंग्रेज अधिकारियों का हाथ था। यह एक मानी हुई बात थी। इस कांड के उपरांत जो पक्षपात अंग्रेज अधिकारियों और सरकार द्वारा महंत को बचाने के लिए किया गया, जिस तरह गुरद्वारा प्रबंध सुधार आंदोलन के मुखियाँ को पकड़ – पकड़ कर जेलों में बंद किया गया, उससे प्रभावित हो कर शिरोमणी गुरद्वारा कमेटी ने इस मुकदमे की जांच में सरकार से असहयोग करने को फैसला कर लिया। कुछ समय पाकर कांग्रेस ने असहयोग का प्रस्ताव पास किया था। पंजाब सरकार, जो गुरद्वारो के पंथक कब्जों को पहले ही बड़े शक की निगाह से देखती थी, शिरोमणी गुरद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा ननकाणा साहिब के केस में असहयोग के प्रस्ताव का, विशुद्ध राजनीतिक अथवा कांग्रेस प्रभावी परिणाम समझने लग गई। उस समय से सरकार की नजर में गुरद्वारा प्रबंध सुधार लहर एक राजनीतिक लहर समझी जाने लगी थी। सरकार सिखों व खासकर अकालियों पर अधिक सख्ती करने पर उतर आई।

श्री हरिमंदर साहिब के तोशाखाने की चाबियां, जो पहले सरकार द्वारा नियुक्त किये गए संरक्षक के पास रहती थीं, डिप्टी कमिशनर, अमृतसर के अपने कब्जे में ले लीं। इससे चाबियों का मामला (Golden Temple Key Affair) छिड़ गया। इसके अधीन आम ग्रिफतारियों के अतिरिक्त 198 प्रमुख सिख पकड़े गए जिन में से शिरोमणी गुरद्वारा प्रबंधक कमेटी की कार्यकारिणी के सदस्य और ऊपर नीचे, इसके तीन प्रधान और चार सैक्रेटरी शामिल थे। इन्हीं दिनों में ही काली दस्तार का मोर्चा छिड़ गया। सरकार, खास कर अंग्रेज अधिकारियों को, सिख के सिर पर बंधी काली पगड़ी, गोली की तरह चुभती थी। कई नंबरदार, जैलदार और अन्य सिख अधिकारी मुअतल किये गए। बल्कि सेनाओं में भी काली पगड़ी बांधने वालों पर बहुत सख्ती की गई। स्वभावत: इसके परिणाम स्वरूप सरकार के विरूद्ध जोश फूटा। इन सभी घटनाओं ने गुरद्वारा आंदोलन को जबर्दस्ती राजनीतिक आंदोलन का रूप दे दिया। इसको भी उस समय मुल्क में चल रही कांग्रेस तथा सिखाफत आदि राजनीतिक आंदोलनों के क्रम में गिना जाने लगा। ऐसी दशा में सिखी के इस आंदोलन को कुचल देने के लिए सरकार को जो भी बहाना मिला, उसको जोर लगा कर प्रयोग करने के साधन जुटाए गए। गुरद्वारा गुरू के बाग पर हुई घटना भी सरकार द्वारा की गई ऐसी कार्यवाही की जंजीर में एक मजबूत कड़ी थी।

8 अगस्त सन् 1922 को, जब गुरद्वारे के लंगर हेतु जलाने की लकड़ी लाने के लिए पांच सेवादार गुरद्वारे के जंगल में से एक कीकर काटने गए, तो अमृतसर के डिप्टी कमिशनर, मिस्टर डनट के आदेश से पुलिस ने इनको लकड़ी चोरी करने के अपराध में ग्रिफतार कर लिया। इनका अदालत में चालान कर दिया गया। अगली सुबह लकड़ी काटने को गए अन्य पांच सिखों को भी पकड़ लिया गया। इस प्रकार हर रोज सिख पकड़े जाने लगे। अदालती कार्रवाई को पूरा करने के लिए, गुरद्वारे के भूतपूर्व महंत सुंदर

दास से एक रिपोर्ट 10 अगस्त को थाने में दर्ज करवा ली गई कि 'मुल्ज़िमों ने मेरी ज़मीन में से लकड़ी काटी है।'

सिख स्वभाव की यह विशेषत है कि सख्ती के सामने यह झुकता नहीं। जैसे – जैसे इनको तपाओ, इनका जोश बढ़ता ही जाता है। सूचना सिख इतिहास इस बात का साक्षी है कि चाहे कितनी मुसीबत सहनी पड़ जाए, सिख जब किसी सत्य पर डट जाएं, जो इससे पीछे नहीं हटते। मर – मारने से भी संकोच नहीं करते । यह वीरता का गुण है। 'जबै बाण लागै तबै रोस जागै'। क्योंकि सिख वीरों की कौम है। जान की खेल, खेल जाना इस का मौलिक कर्म है। इसको घुट्टी ही यह मिली है कि 'सिर दीजै काणि न कीजै।'

गुरू के लंगर के लिए लकड़ी काटने गए पांच – पांच सिख रोजना कई दिन पकड़े जाते रहे। बीच में से कई दिन कोई ग्रिफतारी न हुई। परंतु 23 अगस्त को 66 सेवादार, चाहे वे लकड़ी काटने गए थे या लंगर में गुरद्वारे के अंदर कोई डयूटी दे रहे थे, सब को पकड़ लिया गया। ऐसा ही 24 अगस्त को हुआ । इस दिन तक पकड़े गए सिखों की संख्या 187 हो चुकी थी। 25 अगस्त को अमावस का दीवान, हमेश की तरह बाहर खुले स्थान पर लगाया गया । इस में मिस्टर बी.टी. अंग्रेज, एडीशनल पुलिस कप्तान ने आपत्ति की। बात बढ़ गई। बी.टी ने लाठीचार्ज का आदेश दे दिया। गुरू ग्रंथ साहिब की सेवा में बैठे अकाली सिंघ को भी लाठियों से मारा गया। उसको केशों से पकड़ कर घसीटा गया और बाहर ले जाया गया। इसी दिन सरदार खड़क सिंघ, प्रधान शिरोमणी गुरद्वारा प्रबंधक कमेटी, इसके तीन सैक्रेटरी – भगत जसवंत सिंघ, सरदार नरैण सिंघ बैरिस्टर, सरदार साहिब सिंघ और कई अन्य मुखी सदस्यों – मास्टर तारा सिंघ, सरदार महिताब सिंघ, सरदार सरमुख सिंघ झबाल को पकड़ लिया गया।

ज्यों – ज्यों पुलिस की इस कार्रवाई की खबरें बाहर निकलीं, सिख संगत के काफिले अमृतसर और गुरू के बाग की ओर कूच करने शुरू हो गए। पर सरकार द्वारा इन को यहां पर पहुंचने से रोकने के प्रयत्न किए गए। दूर – दराज से गाड़ियों पर आने वाले सिखों को अमृतसर से पहले ही लाहौर आदि स्टेशनों पर, गाड़ियों से उतारना शुरू कर दिया गया गुरू के बाग को आने वाले सभी रास्तों व पुलों आदि पर पहरे बिठा दिए गए। कोई सिख आगे जा न सके, इस बात के भरसक प्रयास किये जाने लगे। बल्कि जो कोई गुरू के बाग के लिए राशन, आटा, दाल आदि ले कर आता तो उससे छीन लिया जाता । इस तरह गुरू के बाग राशन पहुंचना भी बंद हो गया।

समीप के कई गांवों में जा कर पुलिस के कई व्यक्तियों की इस शक में मार पिटाई की कि उन्होंने गुरू के बाग में एकत्र हुए सिखों के लिए राशन भेजा था। गुरद्वारे के आस – पास, दूर – दूर तक पुलिस ने पहरा लगाया हुआ था ताकि गुरू के बाग के लिए बाहर से आटा दाल न जा सके। गांवों में इस तरह हुई मार – पिटाई की जब जांच की गई तो बहुत गंभीर रुप से घायल हुए एक आदमी को

सर्वाधिक 24 चोटें, एक अन्य को 18 व तीसरे को 21 चोटों के निशान थे। इसी प्रकार अन्य समीप के गांवों की दशा थी। टीरा गांव के खेतों में दो आदमियों (बाप – बेटे) भाई भगत सिंघ व भाई तारा सिंघ को इसी संबंध में इतनी मार मारी गई कि दोनों बाप – बेटा सिसक – सिसक कर दम तोड़ गए। गुरद्वारा गुरू का बाग से रोजाना पांच या चार सिखों के पांच जत्थे, बारी बारी से बाहर लकड़ी काटने जाते और पुलिस के हाथों की सुम वाली लाठियों से बुरी तरह पीटे जाते। इसी प्रकार अमृतसर से पहले, पचास – पचास और कुछ दिन के पश्चात सौ – सौ का जत्था गुरू के बाग की ओर जाना शुरू हो गया। चलने से पूर्व श्री अकाल तख्त के सम्मुख सभी शपथ लेते जो इस प्रकार होती :

सन् 1922 ई. अकाली अंदोलन के समय बिट्रीश सम्राज्य से अथवा उनके टाउट – महान्तों से गुरूद्वारों को स्वतन्त्र करवाने के लिए लहर चलाई गई । उसके दमन करने के लिए अंग्रेजों ने निरापराध तथा निहत्थे लोगों पर बहुत अत्याचार किये । प्रस्तुत दृश्य गुरू का बाग (अमृतसर) का है यहां सिक्ख ईधन की लकड़ियां लेने जाते और वे मन, बचन और कर्म से अहिंसक रहते परन्तु गोरा सरकार उन पर यातनाएं की आंधी झूला देती और सभी को पीट – पीट कर अध मरा कर फैक जाते ।

"भले ही किसी भी दशा में और कितनी भी कठिनाइयों का सामना करना पड़े, मैं आगे से हाथ नहीं उठाऊंगा और जब तक मेरी होश कायम रहेगी, मैं गुरू के बाग की ओर बढ़ने के प्रयत्न जारी रखूंगा और कोई व्यक्ति मुझे, मेरे लक्ष्य से हटा नहीं सकेगा।"

प्रण लेने वाले प्रत्येक सिख के सिर पर काली दस्तार पर एक छोटा सा मोतिए के फूलों का सफेद हार, सेहरे की भांति बंधा होता। उपरांत जत्थेदार अरदास करते, "सच्चे पातिशाह, तेरे सेवकों ने तेरी सेवा के लिए कमर बांधी है, तूं इन के अंग – संग हो कर इन से वही सेवा लेना , जो तेरे दर पर स्वीकार्य हो। तेरे सेवको पर तेरी कृपा सदा बनी रहे और वह तेरे हजूर किये प्रण में अडिंग रहें।" अब यह जत्था श्री हरिमंदर साहिब के दर्शन करते हुए रवाना हो जाता । शहर में से चार – चार की कतारों में मार्च करते हुए यह जत्था गुरू के बाग की सड़क पर चल देता। हजारों दर्शक जत्थे के दोनों ओर चलते जा रहे होते। रास्ते में गुरू के बाग से बहुत पहले ही पुलिस जत्थे को रोकती, पर ये सतिनाम वाहिगुरू की धुनि में मस्त, जब तक आगे बढ़ते ही जाते जब तक लोहे की सुम वाली लाठियों की मार से ये बेहोश न हो जाते, जब तक इनको मार – मार कर सड़क के साथ बने पानी के खड्डों में न गेर दिया जाता। कई बार बेहोश हुए सिखों को होश आती तो वह फिर – फिर उठ कर आगे बढ़ने का प्रयास करते। पर दुबारा इन्हें मारा जाता और यह वाहिगुरू, वाहिगुरू, वाहिगुरू जी, सतिनाम, सतिनाम, सतिनाम जी का जाप करते हुए आगे बढ़ते जाते, जब तक ये बेहोश या निढाल करके, केशों से पकड़ कर, घसीट कर पानी की खड्ड में धकेल नहीं दिये जाते। कभी भी कोई सिख मारनेवालों के विरूद्ध आवाज नहीं उठाता। इन जत्थों में दो फौजी पेनशनरों के सौ – सौ के जत्थे भी थे। इक्का – दुक्का फौजी अन्य जत्थों में भी थे।

इस बेरहिम व बेदर्द मार पिटाई की खबरें सारे देश में फैल गई। अनेक कौमी व राष्ट्रीय नेता इस दृश्य को अपनी आंखों से देखने के लिए यहां पहुंचे। इन में से कुछ एक इस प्रकार थे– पंडित मदन मोहन मालविया, पादरी सी. एफ. एंड्रूज़ एनरेबल सरदार जोगिंदर सिंघ, सरदार सुंदर सिंघ मजीठिया, सरदार हरबंस सिंघ अटारी, लाला दुनी चंद, प्रधान पंजाब कांग्रेस, मलक लाल खां, मैंबर खिलाफत कमेटी। कांग्रेस व खिलाफत नेता सैयद अताउल्ला शाह, प्रो० रुचि राम साहनी, हकीम अलमल खां दिल्ली, स्वामी श्रद्धा नंद, किफायत उल्ला, प्रैजीडैंट जमाइतुल उलमा, डा० अन्सारी, भाई जोध सिंघ, शमापीठ के श्री स्वामी शंकर आचार्य, पंडित मोती लाल नेहरु ओर विशेष प्रैस के प्रतिनिधि : इंडीपडैंट (इलाहाबाद) के मिस्टर सुंदरम, मिस्टर जी. सी. राम पाल, बंदे मातरम लाहौर, सैयद हबीब, संपादक सियासत, सरदार अमर सिंघ लायल गज़ट मिस्टर अतीकी, सहायक एडीटर मुसलम अखबार जिमींदार, मिस्टर मिलखी राम, अखबार स्वराज मद्रास, सरदार चरन सिंघ, एडीटर जत्थेदार आदि।

बेहोश और घायल सिखों को रोजाना लारियों व ट्रकों में अमृतसर ले जाया जाता जहां उनकी देख भाल के लिए विशेष अस्पताल खोले गए थे। इनकी रोजाना मरहम पट्टी व दवाओं के खर्च का अनुमान उस समय तीन हजार रूपय था। 8 सिंतबर तक इन अस्पतालों में दालिख घायलों की संख्या 83 6 और गुरू के बाग में खोले गए अस्पताल में मरीजों की संख्या 200 थी। इस के बाद 12 सितंबर की शाम तक एक सौ सिख रोजाना मार – पीट कर, घायल या बेहोश करके इन अस्पतालों में दाखिल किया जाता रहा। 13 सिंतबर को रैवरैंड सी एफ एंड्रयज की प्रेरणा कर गवर्नर पंजाब के दखल देने से, मार पिटाई का सिलसिला बंद किया गया और हर रोज जत्थे के एक सौ सिख, जो अमृतसर से गुरू के बाग जाते, पकड़ कर जेलों में भेजे जाते रहे। अकाल तख्त से चलते समय, जिस तरह जत्थे के एक सौ सिख, जो अमृतसर से गुरू के बाग जाते, पकड़ कर जेलों में भेजे जाते रहे। अकाल तख्त से चलते समय, जिस तरह जत्थे में जाने वाले सिखों की माताओं, बहनों या पत्नियों, ने जिस सम्मान के उनके गलों में फूलों के हार डाल – डाल कर सौ – सौ आशीष देनी और गुरू की सेवा के लिए अपना आप भेंट करने, व जिस चाव से उनको बधाईयां पेश करना – वह सारा दृश्य इतना भावपूर्ण होता कि दर्शकों के नेत्र सजल हो जाते। यह सिलसिला लगभग दो महीने जारी रहा। 17 नवंबर 1922 तक गुरू के बाग के मोर्चे के 5605 सिख जेलों में बंद किये जा चुके थे। यह सिखों द्वारा इस में रत्ती भर भी कमजोरी नहीं आई थी। जमीन का ठेका राय बहादुर गंगा राम को दिलवा कर उस की ओर से पेड़ काटने की छूट का ऐलान कर दिया और इस तरह यह मोर्चा समाप्त हुआ।

मोर्चा गुरू का बाग के संबंध में

(आंखों देखी व जनमत)

गुरू के बाग के मोर्चों में सिखों ने जिस दृढ़ता और सिदक से अकथनीय मुसिबतों का सामना किया और अति दर्जे की तशदद के सामने हाथ न उठाने की जो अद्वितीय मिसाल पेश की, उस का सही अनुमान लगाने के लिए कुछ एक प्रमुख दर्शकों के कथन जो उस सयम के अखबारों, जांच रिपोर्टों और उस बारे में छपी पुस्तकों में प्रकाशित हुए, पाठकों की जानकारी के लिए नीचे अंकित हैं।

प्रो. रुचि राम साहनी, जिन्होंने इस मार्च के सारे प्रबंध और भिन्न – भिन्न दृश्यों को बहुत समीप रह कर देखा और जांच की थी, अपनी पुस्तक (Struggle for Reform in Sikh Shrines) की भूमिका में लिखते हैं:

'इन अवसरों पर मैंने देखा कि साधारण मनुष्य, जो इस कौम की अति छोटी श्रेणियों में से इस सेवा के लिए आगे आए थे, उच्च व आदर्श ऊंचाईयों तक पहुंचे। उन्होंने शूरवीरों का रोल अदा किया। साधारण ग्रामीण किसानों व मजदूरों ने किसी आंतरिक दिल से उठी आवाज और धर्म के गहरे जज्बे से प्रेरित हो कर, इस आदम तशदद (आगे से हाथ न उठाने) वाले संघर्ष में वह रोल अदा किया है जिस पर बड़े से बड़ा व्यक्ति भी गर्व कर सकता है। वह सही अर्थों में एक बेमिसाल इतिहास की रचना कर रहे थे। मैं मानता हूँ कि जब तक मैंने यह दृश्य अपनी आंखों से नहीं देखे थे, मैं सिक्ख शहीदीं और गुरूओं की उन साखियों पर विश्वास नहीं करता था जिनमें उन के द्वारा, बिना किसी झिजक के हंसते हंसते और खिले माथे, गैर मामूली व अजर यातनाओं को सह जाने और अपने सिदक में पूरे उतरने का वर्णन आता है। जो असहनीय कष्ट वे केवल इसलिए सहते रहे कि उनके अंदर एक जज्बा था कि यह सेवा अकाल पुरख उन से ले रहा था। ये शब्द लिख कर मैं इस बात की निजी साक्षी पेश करना चाहता हूँ कि गुरू के बाग के अंदर सैंकड़े लोगों ने रोजाना जो असहनीय यातनाओं को सहन किया और मुंह से वाहिगुरू, वाहिगुरू कहते हुए जिस अडोलता का प्रमाण दिया, कम – से – कम इस वर्तमान समय मे किसी कौम के लोगों द्वारा उस की मिसाल पेश हुई नहीं सुनी गई।"

जब पंडित मोती लाल नेहरू, गुरू के बाग के मोर्चे को देखकर अमृतसर से वापिस आए उनको श्री सुंदरम, सहायक एडीटर इंडीपेंडेंट ने पूछा तो उन्होंने कहा : "इस ने मेरे मन पर बहादुर अकालियों के लिए अति दर्जे की महानता और सम्मान अंकित कर दिया है। मेरी उनकी प्रति सनिम्र डंडवत है। विश्व भर की समूची मानव जाति और देशों में इन जैसे अच्छे लोग कभी नहीं हुए होंगे।"

It has impressed me with the deepest respect and admiration of the brave Akalies. I salute them with All reverence. They are the finest People that have ever inhabited any part of the world. आगे चल कर उन्होंने कहा, "उन

बहादुर अकालियों ने, जो भारत की मानवता का शानदार नमूना पेश करते थे। और अपने बलवान शरीर और दलेर आत्मा के कारण, जिन का मुकाबला करना और जिन पर विजय प्राप्त करना, किसी के लिए संभव नहीं था, ने अपने पर किये जा रहे कायराना वारों को, बिना सामने से हाथ उठाये सहन किया। उस समय उनके हृदय, अरदास में जुड़े थे। उन की जुबान पर सतिनाम, वाहिगुरू का जाप हो रहा था.... 'सत्य तो यह है कि अकालियों ने दुनिया को सत्याग्रह की वास्तविकता और महानता को समझने में निरी सहायता ही नहीं की, बल्कि ऐसा करके उन्होंने न केवल मानवता की बहुत भारी सेवा की है और अपने लिए त्रैकाल रहने वाला यश अर्जित किया है।

(Guru Ka Bagh Satyagrih पृष्ठ 68 से 73)

जौहान एक होएलैंड अपनी पुस्तक क्रास मूव्स ईस्ट में लिखते हैं कि इस सत्याग्रह का लहर में हिंदुस्तान की सब से अधिक मार्शल और गर्व करने योग्य कौम के सैंकड़े फौजी पेनशनरों को बारी – बारी से पुलिस के घेरे में दाखिल होते हुए ओर उनके हाथों बिना हाथ उठाए लाठियों से मार खाते हुए देख कर, एक अंग्रेज दर्शक ने मुझे बताया कि 'मैंने अपने जीवन में इतना भयानक और साथ ही इतना गहरा प्रभाव रखने वाला दृश्य नहीं देखा।'

(A brief Account of the Sikh People pg 67)

मुस्लिम अखबार ' सियासत' के एडीटर सैयद हबीब के गुरू के बाग के मोर्चों में अकाली जत्थों पर लाठियों बरसती देख कर अपने अखबार में लिखा था:

बहादुरी में वोह यकता हैं लेकिन

नहीं है कुव्वते बर्दाश्त में भी अकाली सिख किसी से कम

लाला लाजपत राय के अखबार बंदे मातरम ने लिखा था:

नुसरत हम रकाब उठाओ जिधर कदम

तुम को मिलगा फतेह का तगमा अकालीओ

स्वराज का जो राज हो अपने देश में

होगा तुम्हारे हाथ में झंडा अकालीओ !

परवाने तुम खरुसे सहर मुसलम वा हनूद

सिखलाओ उन को शमाह पर जलना अकालीओ!

भारत के हम कपूत हैं और आप हो सपूत

घर घर में हो रहा है यही चर्चा अकालीओ!

ईसाई मुनकर और तुम हो पैरूए मसीह

तुम दर्दे हिंद के मसीहा हो अकालियो!

उस समय के एक कवि मेला राम ने लिखा था :

तेरी कुबानियों की धूम है आज जमाने में

बहादुर है अगर कोई तो वह तूं ए अकाली है

बड़ी तारीफ के काबिल है तेरी हिम्मतो जुर्रत

कि जब जिहद आजादी में तूं ने जान डाली है

पुलिस की लाठियां तू ने सहीं सीना सिपर हो कर

फिर इस पर लुत्फ यह, लब पर शिकायत है न गाली है।

अखबार दर्पन में एक मुसलमान शायर का कलाम छपा था

ऐ फलक देखी अज़ल से है यह दुनियां तू ने

देखा होगा मगर ऐसा ना तमाशा तूने

जिस तरह कोई धुनकता है रूई कौ नदाफ

जिस्म इनसान को कटता हूआ देखा तू ने

एक उंगली भी उठाना जो समझते हों गुनाह

उन को देखा है गज़बनाकी से पिटता तू ने

मुझे हैरत है कि क्यों गिर न पड़ा तू चकरा कर

जुलम जब होते हुए देखे निराला तू ने

कौम के हाथ लरज़ते थे, अकाली शाबाश

खूब स्वैराजिए के झंडे को संभालता तू ने।

(वरियाम इकेला पृष्ठ 200.201)

गुरू के बाग के मोर्चे में जाते हुए अकालियों के भरोसे और सिदक का वर्णन करते हुए श्री जी. ए. सुंदरम सहायक एडीटर, इंडीपैंडेंट अपनी पुस्तक (Guru Ka Bagh Satyagrah) के पृष्ठ 30 – 31 पर लिखता है :

यह अकाल पुरख का हुकम है!

'एक साधारण मध्यम श्रेणी के अकाली के साथ मेरी बातचीत हुई। मैंने उसको पूछा कि 'यदि

सरकार आपके इस आंदोलन के सारे लीडरों को पकड़ ले तो यह आंदोलन किस तरह चलेगा?' उसका सरल सा उत्तर था, 'उन की जगह पर और आदमी आगे आ जाएंगे और इसकी अगवाई करेगे।' मैंने फिर उस को सोच का उत्तर देने को कहा कि अगर सही अगवाई दे पाने योग्य सारे लोग पकड़ लिए गए तो साधारण ग्रामीण लोग इस को कैसे चला पाएंगे? उसने बड़ी दृढ़ता से कहा कि यह बिल्कुल संभव है, 'प्रधान और कमेटी सारे ईश्वरीय आदेश के अनुसार काम करते हैं। मैंबर चाहे कोई भी हो, फैसले वहीं होंगे जैसा अकाल पुरख का आदेश होगा।'

इसके उपरांत उस अकाली ने मुगल हकूमत के समय की, सिखों की एक ऐसी वार्ता सुनाई कि हमें पता है कि अब भी जिस किसी को भी प्रधान बनाया वाहिगुरू उस को काम करने की सूझ – बूझ प्रदान करेगा।

जब सी. एफ. एंड्रयूज को पूछा गया कि अकालियों पर हो रही मार पिटाई का उसने मन पर क्या प्रभाव था, तो उन्होंने कहा, मैंने अपने जीवन में इतना दर्दनाक और प्रभावपूर्ण दृश्य नहीं देखा। इस आंदम तशदद (आगे से हाथ न उठाने) की पूरी विजय थी। जिन को मैंने मार खाते देखा वे अपने अंतःकरण में ईश्वर से अरदास द्वारा जुड़े हुए थे। उनकी सही अर्थों में कुर्बानी थी और वे इसे ऐसा ही समझे हुए थे।'

जब श्री एंड्रयूज पर दूसरा सवाल किया गया कि उस के ख्याल में अकालियों की ऐसी कुर्बानी के पीछे भेद क्या है? तो उन्होंने उत्तर दिया 'मैं उन के धर्म को इस का आधार मानता हूँ। शुरू से अंत तक उन के अंदर एक ही ख्याल समाया हुआ था। वह था उन का ईश्वर पर अडिग विश्वास। मुझे प्रत्यक्ष दिखलाई देता है और मैं यह कहने में गलती नहीं खाता कि उन में से हर आदमी को इस बात का निश्चय था कि वह अपने आप को वाहिगुरू के प्रति अर्पण कर रहा है।

(Guru Ka Bagh Satyagrah i`"B 58)

प्रैस के कुछ विशेष प्रतिनिधियों द्वारा एक रिपोर्ट 26 सितबंर 1922 को प्रकाशित की गई थी जिस में कुछ पंक्तियां इस प्रकार हैं:

''हमने देखा कि सैंकड़े मनुष्य जिन को लाठियों की मार मारी गई, ठुड्डे मारे गए और कईयों की दाढ़ियों व केसों को नोचा गया – उनमें से किसी एक ने भी मुकाबले में या बदला लेने के विचार से, मारने वालों के विरूद्ध एक उंगली भी नहीं उठाई।''

'जिन लाठियों से मारा जाता था वे साढे पांच फुट लंबी होती थीं। उनके अगले सिरे पर पांच छः इंच लंबी लोहे की सुम यानी परत चढ़ी होती और दूसरी ओर इतनी ही परत पीतल की चढ़ी थी। कईयों की लोहे की सुम वाले हिस्से पर लोहे का एक बढ़ा हुक, सा बना हुआ था। ये लाठियां डेढ इंच मोटी थीं और बहुत बेदर्दी से अकालियों के सिरों पर, पीठ पर, शरीर के अन्य अंगों और गुप्त अंगों पर मारी जाती थीं।

सिख हाथ जोड़े गुरबाणी का शब्द पढ़ता रहता था। जब पुलिस के सिपाही उन के समीप आते, वे सिर आगे को झुका कर बेठ जाते। वाहिगुरू, वाहिगुरू, वाहिगुरू जी, सतिनाम, सतिनाम, सतिनाम जी गाते होते कि अकस्मात उन पर लाठियां बरसरनी शुरू हो जातीं। वे उतना समय तक बरसती रहतीं जब तक वे बेहोश न हो जाते या उठने योग्य नहीं रहते। इस भयानक घटना को देखने वाले हजारों लोग अधिकांश, अरदास की भावना में वाहिगुरू, वाहिगुरू,वाहिगुरू का जाप करते हाते ..... मार मतार कर लिटाए आदमियों में से यदि कोई सिर उठाता तो तुरंत लट्ठ उसके सिर पर लगती और उनको ठुडे मारे जाते। कईयों को दो – दो, तीन – तीन पुलसिए उठा कर कम से कम तीन फुट की ऊंचाई से सड़क के दोनों ओर बने खतानों में पटका मारते.... कई बार बेहोश पड़े हुओं को घसीट – घसीट कर समीप के बहते पानी के खाल में फेंक दिया जाता। कईयों को दूर ले जा कर खेतों में फेंक दिया जाता। ठुडे मारते समय कोई ख्याल न किया जाता कि वह कहां लग रहे हैं। गुप्त अंगों पर भी ठुडे मारे जाते ..... हमने देखा कि दर्शकों के टोलों के टोले आगे लगा कर, दूर – दूर खेतों में ले जाए जाते और उन से नकदी आदि जो कुछ होता, लूट लिया जाता। कई अकालियों को केशों और दाढ़ियों से पकड़ – पकड़ कर घसीटा जाता। इस रिपोर्ट पर नीचे लिखे अखबारों के प्रतिनिधियों के हस्ताक्षर थेः –

1. रुचि राम साहनी, ट्रस्टी ट्रिब्यून, लाहौर
2. ज्ञान चंद राम पाल, ज्वाइंट एडीटर बंदे मातरम लाहौर
3. जी. ए. सुंदरम, सहायक ऐडीटर, इंडीपैंडेंट इलाहाबाद
4. बाल मुकद वर्मा, प्रतिनिधि स्वाराज्य, मद्रास
5. मिलखी राम, प्रतिनिधि स्वराज्य, मद्रास
6. शफअतउल्ला, मैनेजर जिमीदार, लाहौर
7. अब्दुल मजीद, अतीकी प्रतिनिधि जिमीदार, लाहौर
8. उत्तम सिंघ ज्ञानी, प्रतिनिधि अकाली व परेदसी, लाहौर
9. अनंद नारायण सिउल, सहायक एडीटर ट्रिब्यून, लाहौर

26 सितंबर 1922 (Gurdwara Reform Movement के पृष्ठ 405 से 419 तक)

अब हम पाठकों को गुरू के बाग का वह दृश्य दिखलाते हैं जो श्री सी. एफ. एंड्रयूज़ ने 12 सितंबर 1922 को अपनी आंखों से देखा और जो वैसे का वैसा उनके द्वारा 19 – 20 सितंबर को प्रैस में भेजा गया।

''उस दिन दोपहर के एक बजे, मैं गुरू की बाग को ओर रवाना हुआ और पक्की सड़क छोड़ कर नहर की पटड़ी पर हो लिया । हम तीन तांगों पर सवार थे। हमने नहर का थोड़ा सा ही किनारा तय

किया था। कि जब हमने नहर की दूसरी पटड़ी पर, नीली दस्तारों वाले दो सिखों को देखा जो अपने हाथों के इशारों द्वारा हमें आकाश में उड़कर चक्कर लगाते हुए और अमृतसर की दिशा में उड़कर जाते हुए, एक बड़े पक्षी को देखने का संकेत कर रहे थे। तांगों में बैठे सारे यात्री तुरंत तांगों से उतरे और बड़ी तीव्रता से मुझे उस पक्षी को देखने को कहा। उन्होंने मुझे बताया कि यह सुनेहरी बाज़ हर रोज गुरू के बाग से ठीक उस समय उड़ता है जब जत्थे की मार पिटाई शुरू होती है और वहां से उड़ कर अमृतसर हरिमंदर साहिब की सेवा में लगे लोगों को, गुरू के बाग पर हो रही घटना से अवगत कराता है। उन्होंने मुझे पूछा कि क्या यह पक्षी मेरी नज़र में पडा था या नहीं? मैंने कहा कि उनके बताए के अनुसार मैंने वह देखा तो लिया है परंतु दूर होने के कारण मैं नहीं कह सकता कि वह सुनेहरी है या नहीं।''उन्होंने कहा, ''यह वही पक्षी है, वही सुनेहरी बाज़ है। यह अब यहां पर हो रही घटनाओं व कठिनाइयों की सूचना दरबार साहिब पहुंचाने गया है।'' मैंने देखा, उनके चेहरों से उस समय एक खुशी टपक रही थी। एक लाली थी। खास पर आधी उम्र की एक सिख महिला,जो हमारे साथ थी, का चेहरा उस के अंतःकरण की गहरी श्रद्ध व भावना की तस्वीर बनी रहा था मुझे उस समय उसमें से मैडोना (ईसा मसीह की माता) की झलक पड़ी। मेरे साथियों के चेहरों पर गहरे सिदक व सम्मान की भावना और उनके अंदर से उमड़–उमड़ कर छलकते निर्मल भाव वाले चाव ने, मुझे अति प्रभावित किया। यह पहली घटना थी जिस ने उन सारी घटनाओं को, जो इस के बाद मैंने देखीं, धार्मिक रंगत दे दी। इसने मुझे समूची अकाली सुधार आंदोलन का धार्मिक–पक्ष इतना दृढ़ करवाया जितना और कोई घटना नहीं करवा सकती थी।

नहर की पटड़ी उतर कर हमने काफी समय तक एक खुले मैदान में से होकर एक रास्ते से निकलना था जो कई स्थानों पर पानी से भरा पड़ा था। इस रास्ते पर स्वभावतः हमारे तांगों को धीरे–धीरे जाना पड़ा। रास्ते में हमें नीली दस्तारों वाले एक सौ सिखों का जत्था मिला। वे उसी दिन सुबह दरबार साहिब अमृतसर से यह सौगंध खा कर चले थे कि वे, वचन और न कर्म से, कोई तशदद अर्थात हिंसा वाली बात करेंगे। बाद में उनको इस सौगंध के अक्षर–अक्षर पर पूरा उतरते हुए मैंने आंखों देखा। अन्य दिवसों पर मुझे ऐसे अवसर भी प्राप्त हुए जब मैं उनको दरबार साहिब से रवाना होते हुए देखता था। उनके चेहरों से एक चाव व खुशी टपकती थी, जैसा चाव धर्म के काम करते हुए हुआ करता है। उनकी काली दस्तारों पर सफेद फूलों का छोटा हार, प्रत्येक के लिए किसी बलि की वेदी पर चढ़ने का संकेत देता था। मैंने यह भी देखा कि जब वे बड़ी श्रद्धा, सम्मान और चाव में आ कर अपने आप को अकाल पुरख को समर्पित करते और रसना से सतिनाम, वाहिगुरू का जाप करते हुए शहर में से बाकायदा लाइनें लगाकर पैदल निकलते, तो शहर के हिंदू, मुसलमान और अन्य सभी धर्मों के लोग उनको देखने, और उनकी हर तरह से प्रशंसा करने के लिए गलियों व बाजारों में उमड़ पड़ते। शहर में से तो उन्होंने अपनी

यात्रा आरंभ ही करनी होती थी पर आगे से मीलों लंबा सफर उन्होंने कीचड़ – पानी भरी राहों से तय करना होता था। आज जब मैंने पहले दिन उन को अपने लक्ष्य (eaftys edlwn) पर पहुंचते देखा तो उनके कपड़ों पर स्थान – स्थान पर कीचड़ और मिट्टी पड़ी हुई थी। पसीना उनके शरीरों से परनालों की तरह बह रहा था। पर उन की दस्तारों के ऊपर सफेद फूलों के हार उसी तरह प्रदर्शित हो रहे थे। उन के मुंह से उठ रही सतिनाम, वाहिगुरू की ध्वनि और उन के चेहरों पर दहकती धर्म भावना की लाली में, वही चढ़दी कला थी जिस को ले कर वे दरबार साहिब से चले थे। उन में छोटी उम्र के लड़के भी थे और थोड़े से सफेद दाढ़ी वाले वृद्ध भी, जो हठ करके जत्थे में शामिल हुए थे। पर अधिकांश भर – जोबन थे और यह अनुमान आसानी से लगाया जा सकता था कि उन गठे शरीर वाले जवानों में से बहुत से ऐसे भी थे जिन्होंने फौज की नौकरी की हुई थी। बाद में मुझे इनकी सही गिनती जानने का अवसर भी मिल गया। इस से मालूम होता है कि अकाली जत्थों के अंदर जाने वाले कम से कम एक तिहाई वे जवान थे जिन्होंने सैनिक जीवन व्यतीत किया हुआ था और जो बड़े विश्व युद्ध में शामिल होकर लोटे थे। रास्ते में जाते हुए जत्थे की मिल जाने पर बाद में हम तांगों पर से उतर गए और कुछ दूरी तक जत्थे के साथ चलते गए। मैंने अंग्रेजी पोशाक पहनी हुई थी और सिर पर धूप अवरोधी टोपी थी। पर यह जाने बिना कि मैं कौन हूँ, उन्होंने मेरी बंदगी, मेरे अभिवादन का, मुझे बाकायदा उत्तर दिया और मुझे देख कर उनके चेहरों पर रत्ती भर भी भौं सिकुड़ने का आभास नहीं हुआ। एक स्थान पर पानी पीने के लिए थोड़ा रुकना पड़ गया। उस समय उनको मेरा पता चला और वह मेरे पास आए। जो आदमी पानी पिला रहा था उसने एक पीतल का बर्तन (कटोर), जिस से वह पानी पिलाता था, पानी से भर कर मेरी ओर बढ़ाया। जब मैंने पानी पीने के लिए ओक भरी तो वह मुझे कहने लगा ''आप इस बर्तन को मुंह लगाकर पानी पी लें। अतः मैंने वह बर्तन ले कर उस में से पानी पी लिया। इस बात ने भी मेरे मन पर बहुत धार्मिक प्रभाव डाला और मुझे ऐसा लगा जैसे कुर्बानी देने से पूर्व मुझे अमृत का घूंट पिलाया गया हो।

रास्ते में जिस पड़ाव पर भी पानी पिलाने का प्रबंध हो सकता था, गांवों के पुरुष स्त्री हर रोज जल – पानी की सेवा के लिए जत्थे की इंतजार में खड़े रहते थे। इन के अंदर भी, खास करके महिंलाओं के चेहरों पर एक असाधारण भावना व प्यार छलकता था। ऐसा प्रतीत होता था जैसे मातांए अपने बच्चों को धर्म हेतु कुर्बान होने और बिना हाथ उठाए मुसीबते सहन करने के लिए आशीश दे रही हों।

बहुत कठिनाईयां सहन करने और दुर्गम रास्तों में से निकलने के पश्चात, अंततः हम गुरू के बाग पहुंच गए। पहली चीज जो हमारी नजर में पड़ी, वह आठ मोटर लारियां थी। बिल्कुल वैसी ही जो यात्रियों के यातायात के लिए प्रयोग की जाती हैं। यहां पर वे घायलों और मरीजों को उठा कर ले जाने हेतु लाई गई थीं। उनको देखते ही मेरे मन पर उन घायलों की भयानक पीड़ा का चित्र खिंच गया जिन

को इन लारियों में डाल कर, चौदह मील से अधिक यात्रा करके शहर में इन के लिए स्थापित हस्पतालों में ले जाया जाएगा। इन लारियों का कई स्थानों पर रास्ते के कीचड़ में फंस जाना भी पक्की बात थी और कच्चे रास्तों के धक्के – झटके जो स्वस्थ व्यक्ति भी इस कठिनाई को सहन नहीं कर पाता उनके लिए जिन के शरीरों पर कई चोटें व घाव होंगे, सहन करना कितना कठिन होगा।

यदि थोड़ी सी भी मानवीयता इन में होती तो सरकारी कर्मचारी इसका जरूर ख्याल करते। पर यह बात किसी के मन में नहीं आई और न ही किसी ने सुझाई। नहर के साथ चलने वाला कच्चा रास्ता ग्रामीण सड़कों से भी गया गुजरा था। पर नहर के दूसरे पार सरकारी अफसरों के आने जाने के लिए एक सर्विस रोड बनी हुई थी। इस पर घायलों की लारियां बहुत आराम से और जल्दी जा सकती थीं। यदि लारियों के लिए यह सिर्विस रोड खोल दी जाती तो गुरू के बाग से घायलों को ले जाने के लिए इस से बेहतर सुविधा हो जाती। पर अधीनस्थ श्रेणी के कर्मचारियों ने, जिन को डाक्टरों और इस काम पर लगे अन्य सेवादारों द्वारा कई बार यह राह खोलने के लिए विनती की, इतना कहने कहलाने की रत्ती भर भी परवाह नहीं की। मेरा विश्वास है कि यदि बड़े अधिकारियों को सर्विस रोड खोलने के लिए कहा जाता तो वे इनकार न करते। पर हिंदुस्तान में इस समय बड़ी मुश्किल इस बात की कि आम जनता और सरकारी कर्मचारियों के बीच एक बड़ा पाड़ पड़ चुका था जो दिनों दिन बढ़ता ही गया। जनता को इतना खट्टा अनुभव हो चुका था कि उनका सरकारी कर्मचारियों पर राई मात्र भी विश्वास नहीं रहा था।"

गुरू के बाग पहुंचने के उपरांत्त

जब मैं गुरद्वारे पहुंचा तो मुझे यह देखकर हैरानी हुई कि वहां पर बावजूद इतनी भीड़ एकत्र होने के, उनके अंदर रत्ती भर जोश या गर्मी नहीं थी जिस का होना मैं स्वाभाविक समझता था। अंदर एक आदमी गुरू ग्रंथ साहिब का पाठ, बहुत सहज स्वभाव से कर रहा था। सारी संगत बड़ी शांति से चुपचाप पाठ सुन रही थी। एक तरफ कुछ सेवादार, आए यात्रियों के शाम के लंगर के लिए चक्की पर आटा पीस रहे थे। यहां पर किसी को पता भी नहीं था कि जत्थे की मार पिटाई शुरू हो चुकी थी और कई सिख इससे पहले मारे पीटे जा चुके थे। मैंने एक आदमी को पूछा तो मुझे पता चला कि मार पिटाई तो चल रही थी। उनके चेहरों से उस दृश्य की भयानक और उनके अंदर की पीड़ा का अंदाजा लगाया जा सकता था। जहां मार पिटाई हो रही थी उस स्थान पर और मेरे बीच एक मकान था, पर दर्शक लोग मेरे सामने थे। मैंने देखा कि ये बिल्कुल चुप चाप थे। पर अधिकांश के ओंठ फटकते और अकाल पुरख के आगे अर्ज कर रहे प्रतीत होते थे। उनको यह ही सिखलाया गया हुआ था कि वे वाहिगुरू, वाहिगुरू का जाप करते हुए उस की कृपा व बख्शिश की याचना करें। उन लोगों के चेहरों पर पीड़ा के आसा और खामोशी में उन के हृदयों से उठ रही अरदास मुझे हज़रत ईसा मसीह की सूली का अक्स दिखला रही थी। उनके साथ जो बीत रही थी वह सचमुच ही ईसा मसीह के सूली चढ़ने का धुंधला सा चित्र

था। (What was happening to them was truly insome dim way A crucification) अकालियों पर बरसाई जा रही (मुसीबतों की) आग को वे अमृत के छीटों के समान समझते थे। वे अपने दर्द भरे हृदयों की गहराई से अकाल पुरख की कृपा और मेहत के लिए अरदास भेज रहे थे।

अब तक मार पिटाई का दृश्य मैंने नहीं देखा था। केवल अन्य दर्शकों के चेहरों से ही इस का अनुमान लगाया था। पर जब मैंने बीच वाले मकान से आगे निकल पर इस दृश्य को अपनी आंखों से देखा तो मुझे मैदान में बैठे दर्शकों के पीड़ित चेहरों और उनके फड़कते ओंठों में से निकल रही अरदास की समझ पड़ी। एक ऐसा दृश्य था जिस को फिर देखने की मेरी चाह कभी नहीं हो सकती, न कभी कोई अंग्रेज ही इस को सही मान सकता है। मैंने देखा, काली दस्तारों वाले चार अकाली – लगभग एक दर्जन पुलसिए, जिन में दो अंग्रेज थे – के सामने खड़े थे। मेरे देखने से पहले ये चारों धीरे – धीरे चलते हुए वहां पहुंचे थे जहां वे बिल्कुल अलग खड़े थे और नहीं बढ़ रहे थे। उनके हाथ जुड़े हुए थे और ऐसा लगता था जैसे वे अरदास कर रहे हों। फिर उनके द्वारा किसी तरह की भड़काहट मिले बिना ही एक अंग्रेज ने पीतल के सुम यानी परत वाली लाठी की चोट इतने जोर से मारी कि उस की मुट्ठी जिस में उसने लाठी पकड़ी हुई थी।, अरदास कर रहे अकाली की हंसली की हड्डी पर बड़ी जोर से लगी। अति बुज़दिली व कोझे वार को देख कर मेरे लिए अपने आप को संभालना भी बड़ा मुश्किल था, पर मैं इस बात पर अपना मन इतना पक्का किये हुए था कि चाहे कुछ भी हो,मैं न कुछ कहूंगा ओर न करूंगा। केवल देखूंगा ही। क्योंकि मैं समझता था कि वह सौगंध, जो आगे से हाथ न उठाने संबंधी अकालियों ने खाई हुई थी, मेरे लिए भी उतनी ही पवित्र थी जितनी उनके लिए। अतः चुप रहने के लिए मैं मजबूर था। परंतु जिन्होंने यह दृश्य अपनी आंखों से नहीं देखा उनको यह बताना कठिन है कि ऐसा खामोश रवैया अपनाना कितना कठिन था।

जो चोट अकाली सिख को लगती हुई मैंने देखी थी, वह इतनी सख्त थी कि वह तपाक से जमीन पर जा गिरा। उस ने पासा पलटा और जैसे – तैसे करके उठा ही था कि उसी तरह का पुलिस वार उस पर फिर हुआ। इस तरह उन चार में से जो भी आगे बढ़ता, उस को मार – मार कर जमीन पर पटक दिया जाता। कभी अंग्रेज अफसर मारता और कभी उस का अधीनस्थ पुलिस का कोई सिपाही। पर बाद में आए तीनों अकालियों को जल्दी ही नीचे गिरा लिया गया। इन पर और इनके बाद आए अकालियों पर, पुलिस द्वारा जितने भी वार हुए, वह अति वहशियाना थे। एक सामने पड़े निढाल हुए सिख के पेट पर, एक सिपाही द्वारा कस कर ठुठे मारते मैंने अपनी आंखों से देखा। यह इतनी नीचता भरी चोट थी कि मेरी चीख निकल गई और मैं बढ़ने से न रह सका। पर जल्द ही पीछे से मुझे इस से भी अधिक घृणाजनक घटना देखने का अवसर मिला। वह थी एक पुलसिए का जमीन पर पटकाए गए एक

अकाली के कंधे और गर्दन के बीच, बूटों सहित ऊपर चढ़ जाना और उस पर पूरा दबाव डाल देना। इतना ही घृणाजनक पुलिस का एक वार, गिरे हुए मनुष्य के पास खड़े एक अकाली पर पड़ा। इस वार ने उस अकाली को अपने गिरे हुए बिहोश साथी के साथ लिटा दिया जब कि उस बेहोश को दो सेवादार वहां से उठाने लगे थे। सिपाही का यह वार इतने वहशियाने व नीचता भरे इरादे से किया गया था कि मैं यह आशा लगाए बैठा था कि अंग्रेज अफसर, पुलिस के ये वार और अन्य ऐसे वार करने वाले सिपाहियों को जरूर झाड़ लगाएगा। पर जहां तक मैंने देखा उस अफसर ने एक बार भी अपने आदमियों को ऐसा करने से नहीं मोड़ा। मैंने ये सारी बातें गवर्नर साहिब और अन्य सभी अधिकारियों को, जिन को उस दृश्य को देखने के बाद मैं मिला, अच्छी तरह खोल कर बताई।

इस सारे दृश्य में प्रयोग किया गया वहिशीपन और मानवता से गिरा हुआ बरताव और भी अकथनीय हो जाता है जब यह देखते हैं कि जिन अकालियों के चेहरों पर न किसी प्रकार के भय के लक्षण थे और न बदले की कोई भावना।

यह संदर्भ प्रो. रुचि राम, श्री सुंदरम, प्रो तेजा सिंघ और भगत लछमण सिंघ की पुस्तकों में से लिया गया है।

12 सितंबर के बाद भी 17 नवंबर तक हर रोज सौ सिखों का जत्था श्री अकाल तख्त से गुरू के बाग को जाता रहा। अब पुलिस द्वारा मार पिटाई करने की बजाए उनको पकड़ लिया जाता। अदालत में से सजा दिलवा कर जेल भेज दिया जाता। इस सिलसिले में ही 25 अक्तूबर को एक सौ सैनिक पैनशनरों का जत्था, सरदार अमर सिंघ (जिन्होंने 23 साल अंग्रेज सरकार की नौकरी की थी), की जत्थेदारी में गुरू के बाग जाते हुए पकड़ा गया। इन में से 74 सिखों को अदालत से दो – दो साल की कैद बा – मुश्कत व सौ – सौ रूपए जुर्माना, और 26 को छः महीने की बिना मुश्कत कैद व सौ रूपए जुर्माना हुआ। इस फौजी जत्थे द्वारा जो संयुक्त लिखित बयान सरदार अमर सिंघ ने दिया, उस में से कुछ शब्द पाठकों की रुचि के लिए प्रस्तुत हैं:

''इस अवसर पर हम सरकार के प्रति यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि गुरद्वारा सुधार आंदोलन, खास कर के गुरू के बाग के मोर्चे संबंधी सिखों के क्या जज़्बात हैं। हमारे जत्थे को इस बात की खुशी है कि हमने अंग्रेज सरकार की ऐसी सेवाएं की हुई हैं जिन पर हर भद्रपुरुष गर्व कर सकता है।''

''हम तीराह, चितराल, अफगानिस्तान, ब्रहमा, चीन, पूर्वी अफका, सूडान, मिश्र, ईरान, मैसोपुटेमिया, पैलिस्टाईन, गैलीपोले, रूस, फ्रांस और अनेकों अन्य छोटे स्थानों पर अंग्रेजों की लड़ाईयों में लड़े और असीम गर्मियों व सर्दियों को सहन किया। हमारे हजारों सिख जवानों को लगातार कई – कई दिन फ्रांस के बर्फानी ठंडे पानी में खड़े रहना पड़ा। रुमेदी व मैसोपुटेमियां की 45 दर्जो की गर्मी में लड़ना पड़ा जहां कम से कम 190 जवान पानी से प्यासे मर गए ..... कतुल, अमारा आदि स्थानों पर जहां किसी

प्रकार की सहायता पहुंचने की दूर की भी कोई आशा नहीं थी रही, न ताल – मेल व कोई साधन ही रहे थे, न खुराक पहुच सकती थी, हम घोड़ों और खच्चरों के मास पर गुजारा करते रहे। हम में से 25 वे जवान हैं जो घायल हो कर फौजी नौकरी करने के योग्य न रहे। एक की टांग काटी गई और दो की आंखें गैस से खराब हो गई। लगभग हमारे सब के पास विशेष सेवा के मैडल हैं। हम में से दो को आई. ओ. एम. को डी. एस. और एक को एम. एस. अर्जित करने की विशेषता प्राप्त है।.... पर गुरद्वारा सुधार आंदोलन के आरंभ से ही सरकार का जो रवैया इस लहर के संग रहा है, उस का हमें बड़ा दुःख है और समय के साथ – साथ हमारे मनों की यह पीड़ा दिनों दिन बढ़ती हो गई है।

हम ननकाणा साहिब का भयानक कांड आंखों देख चुके हैं। फिर हमारे निर्दोष लोगों को पकड़ – पकड़ कर जेलों में फेंकने की जो हमदर्दी सरकार ने दर्शाई है और जो न्याय हमारे बेमिसाल वहशीयाना व बेदर्द कत्लेआम का हाई कोर्ट में हमें मिला है, उन्होंने प्रजा की धार्मिक स्वतत्रंता में दखल न देने संबंधी अंग्रेज सरकार द्वारा मारी गई डींगों और दिये गये वचनों को बिल्कुल नंगा कर दिया है। यह सब कुछ हम ने आंखों से देखा व सुना है। एक सिख होने के नाते सहन किया वह महसूस किया है। बल्कि एक सच्चे न निर्मल और गैरों को ईमानदारी पर पूरा भरोसा रखने वाले मित्र की भांति हमारे दिल पर इस बात की करारी चोट भरोसा रखने वाले मित्र की भांति,हमारे दिल पर इस बात की करारी चोट लगी है कि हम अंग्रेज सरकार के हाथों धोखा खा गए । गुरू के बाग की घटना इस सारी वार्ता का चर्म है। दो मास से, जब यह मोर्चा शुरू हुआ, हम देखते आ रहे हैं कि हमारे भाई कितनी बेदर्दी से गैर – कानूनी तौर पर मारे पीटे जाते रहे। पवित्र केशों और दाढ़ियों से पकड़ कर घसीटे गए। हमारे गुरू साहिबान के शान के उल्ट मानहानि व भड़काहट भरे कुबोल बोले गए। पुलिस द्वारा कानून के नाम पर अति दर्जो के गैरकानूनी थर्ड डिग्री के साधन प्रयोग किये गए। यह सब कुछ बिना किसी कारण, शांति के नाम पर किया गया। जब यह बात हमारे लिए असहनीय हो गया तो अंततः मजबूर हो कर हमें अपने गुरू व पंथ की सेवा के लिए मैदान में आना पड़ा है ताकि हमको भी उस अपमान व दुर्दशा, जो हमारे भाइयों की हुई है, का यही आभास व अनुमान हो सके । हम खुश हैं कि पुलिस ने पहले हमें नंगा कर के अति नीच कैदियों की भांति हमारी तलासी ली और फिर हमारे पर इतना सख्त पहरा रखा कि रात के ग्यारह बजे से अगले दिन सुबह छः बजे तक हमें टट्टी – पेशाब की आज्ञा भी नहीं दी। अब वे लोग ही हमें हथकड़ियां पहनाएंगे, जिन को हम अपना मित्र सखा – जान कर, इतने लंबे समय तक अपने जीवन व स्वयं को मार कर, उनकी रक्षा सेनाओं में सेवा करते रहे। पर हम अपने आप को भाग्यशाली समझते हैं कि गुरु के बाग की जमीन में से गुरू के लंगर के लिए लकड़ी काटने आए। हम पकड़े गए हैं और अब जेल में भेजे जा रहे हैं, जिस को हम बहिशत समझते हैं। ऐसा करके हम पवित्र गुरद्वारों में से भ्रष्टाचार की मैल को धो रहे हैं।"

(Gurdwara Reform Movement & Sikh Awakening pg 432-33)

इसी प्रकार का फौजी पैनशनरों का एक और जत्था 12 नवंबर को भी पकड़ कर कैद किया गया था।

लाला लाजपत राज जो पंजाबी सूबा कांग्रेस के प्रधान भी रहे हैं, ने कहा था:

"जहां तक आगे से हाथ न उठाने वालों पर तशदद और इस के फलस्वरूप अपने स्व की बलि दे देने का प्रश्न है, सिखों ने इस का हैरात अंगेज (आश्चर्यजनक) प्रमाण पहले ननकाणा साहिब, उस के पश्चात अजनाला और अमृतसर (गुरू के बाग) में दिया है। वे ठीक ही अपने गुरूओं के सच्चे सपूत सिद्ध हुए हैं। जिस प्रकार इश्तिहार दिये जाने के बावजूद भी ठंडे दिल से और बिना किसी प्रकार का प्रदर्शन करने के, उन्होंने अपने आप को कुर्बान किया है, उस को मात पाना तो क्या, उसकी मिसाल मिलना भी कठिन है।

(A Brief Account of the Sikh People Pg 70)

अपनी पुस्तक गुरु का बाग सत्यगृह (Guru Ka Bagh Satyagrah) के पृष्ठ 41 पर मिस्टर सुंदरम लिखवते हैं कि घायल व बेहोश हुए अकालियों को केशों से पकड़ पर घसीटा जाता था। जब मैंने 2 सितंबर को अपने आखों से ऐसा होता देखा तो मैंने अंग्रेज पुलिस सुपरिंटेडेंट मिस्टर मैकफरसन को कहा कि केशों से पकड़ पर सिखों को घसीटना उनकी धार्मिक भावनाओं से खेलना है। क्योंकि वे केशों को शरीर का बहुत पाक – पवित्र अंग समझते है। मिस्टर मैकफरसन न मेरी यह बात मान कर कहा कि आगे से ऐसा नहीं होगा । मैं बड़े अफसोस से यह प्रकट करता हूँ कि 7 सितंबर तक तो काशों से पकड़ कर अकालियों को घसीटे जाते मैं आंखों से देखता रहा हूँ। उसके पश्चात मैंने ऐसा होता नहीं देखा।"

अपनी पुस्तक Gurdwara Reform Movement And the Sikh Awakening के पृष्ठ 406 पर प्रो० तेजा सिंघ लिखवते हैं, 'सैकड़े आदमियों में से जिन को हमने बहुत बुरी तरह लाठियों से पिटते, ठुडे मारे जाते और उनके पवित्र केशों व दाढ़ियों से पकड़ कर घसीटे जाते – आंखों से देखा, किसी एक ने भी मुकाबले में या बदला लेने के विचार से अपनी छोटी उंगली तक भी खड़ी नहीं की।" भाई जोध सिंघ (रिटायर्ड वाईस चांसलर,पंजाबी यूनिवर्सिटी) ने गुरू के बाग के मोर्चे में सिखो की होने वाली मार पिटाई का अपनी आंखों देखा दृश्य, दॉ खालसा (The Khalsa) अखबार में दिनांक 4 सितंबर 1922 के अंक में लिखा था: "बीस मिनट मार पिटाई होने के पश्चात फौजियों के एक घुड़ सवार दस्ते को हरी झंडी दी गई जिस पर सारा घुड़ सवार दस्ता मौके पर पहुंच गया। इन में से तीन सवार आगे बढे और गिरे हुए अकालियों के ऊपर से दगढ़ – दगड़ करते हुए निकल गए। घोड़ों के सुम के नीचे सिखों को घायल होते हुए देख कर दर्शक दहाड़ उठे और ज़ार – ज़ार रोए'

गुरू के बाग की यह वार्ता इतनी दर्दनाक है कि इस को बयान करते हुए रोंगटे खड़े हो जाते हैं। जिस सिदक व शीतलता से अकाली सिखों ने ये यातनाएं सहन की उस की मिसाल दुनियां के इतिहास में नहीं मिलती । यह बहादुरी यह जिगरा और अजर को सहन करने की यह शक्ति कहां से आई? यह सतिगुरू के हजूर की गई अरदास और दिये गये वचन का ही फल था जिस को पूरा करना वे अपनी व सतिगुरू की शान समझते थे। उनका विश्वास था कि 'वही जीवन सफलता है जो सतिगुरू के लेखे लग जाए।'

दुनियां की ऐशों इशरत और पदार्थवादी भोग विलास उनको भी उलब्ध थे । वे भी माता पिता, बहनों भाईयों, बच्चों और परिवार वाले थे। पर वे गुरू वाले बने थे। माही की पुकार सुन, वे पीछे न रहे सके और दोहरा दिया सिखी का शानदार इतिहास। उन के गुरू ने कहा था 'खालसा मेरो स्वजन परवारा' वे अपने परिवार को छोड़ कर गुरू के परिवार में जा शामिल हुए। वे कष्ट इसलिए सहते थे कि उनके अंदर यह आभास था कि यह सेवा अकाल पुरख उनसे ले रहा है।' उन की कुर्बानी का आधार उन का धर्म था। आओ हम भी गुरू वाले जो जाएं। धर्म ही हमें वह आभास दे सकता है जिसके होते हुए कष्ट मीठे लगने लग जाते है। यदि हम चाहते हैं कि गुरू के बाग वाला साहस हमारे अंदर आये तो हम भी धर्म को अपना आधार बनाएं । गुरू का अमृतपान करें। गुरू की दर्शाई जीवन शैली को अपनाएं । गुरू का किरदार अपनाएं। हमारी सरदारी, हमारी सामर्थ्य व हमारी आभा इसी शैली व रूप में है। हमारे न्यारे रूप का भय सिखी के बैरियों के लिए सदैव उन की जान का खौफ बना रहा। आज भी हमारा बल, हमारा मान व हमारी शान, हमारे न्यारे रूप व न्यारी जीवन शैली में है। इस को त्याग कर हम चौरासी के भंवर में पड़ जाएंगे। सतिगुरू ने ऐसे ही तो नहीं था कहा:

जब लग खालसा रहे निआरा। तब लग तेज दीओ मैं सारा।
जब इह गहि बिप्रन की रीत । मैं न करो इन की प्रतीत।

शहीदी काण्ड पंजा साहिब (हसन अबदाल) पकिस्तान

नोट: जब पंजा साहिब पश्चिमी पंजाब का एक इतिहासिक नगर) की संगत को यह ज्ञात हुआ की 'मोर्चा गुरू के बाग' के कैदी भूखे प्यासे है, जिन्हें अट्टक नामक किले की जेल में स्थानतरित किया जा रहा है। तब स्थानीय गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी भाई प्रताप सिंघ तथा भाई करम सिंघ जी के नेतृत्व में एक प्रस्ताव पारित किया गया कि किसी भी प्रकार इन देश भगतों को (लंगर भण्डारा) भोजन करवाने का प्रयास किया जायेगा। तब वे रेलवे स्टेशन मास्टर से मिले परन्तु उसने उत्तर दिया यहां गाड़ी खड़ी करने का आदेश नहीं है मैं विवश हूँ इस पर सिक्खों ने मिलकर कहा – हमारे गुरुदेव यही पर जब पर्वत रोक सकते है तब हम उनके अनुयायी एक रेल गाड़ी भी रोकने की क्षमता नहीं रखते क्या? यह विचार कर के बहुत सी संगत रेल की पटरी पर बैठ गई इन में बच्चे महिलाएं भी थी। जैसे ही रेल गाड़ी तीव्र गति से आई वे टस – से मस नहीं हुए परन्तु रेल में स्वयं ही ब्रेंक लगा गया पर कुछ एक अंदोलनकारी प्रथम पंक्ति के कुचले गये और वे शहीद हो गये। यह घटना क्रम 30 अक्तूबर 1922 का है।